शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

बाल्मिकी रामायण में प्रकृति प्रेम व पर्यावरण संरक्षण एवं उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता

प्राप्तिः 25.02.2024
स्वीकृतः 17.03.2024

डॉ० संदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
विजय सिंह पथिक राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कैराना (शामली)
ईमेलः *sandeepchitarkar@gmail.com*

7

सारांश

वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण मानव–मात्र की चिंता का विषय है। पर्यावरण का स्वच्छ एवं संतुलित होना मनुष्य के अस्तित्व एवं विकास हेतु परमावश्यक है। भारत के प्राचीन ग्रंथ प्रकृति एवं पर्यावरणीय चेतना के ज्ञान के भंडार हैं। इनमें बाल्मिकी रामायण का प्रमुख स्थान है। रामायण में प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति जो अपार श्रद्धा, प्रेम एवं चेतना का भाव दृष्टिगोचर होता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस ग्रंथ में पर्यावरण संरक्षण के विविध रूप एवं प्रकार सहज प्राप्त होते हैं। विभिन्न जीव–जंतुओं व वनस्पति को उनकी पर्यावरणीय उपयोगिता के अनुसार महत्व प्रदान किया गया है। अनेक स्थानों पर प्रकृति के विभिन्न घटकों का सजीव मानवीकरण किया गया है। इस ग्रंथ में हम हर समय प्रकृति एवं पर्यावरण को अपने निकट पाते हैं। रामायण में जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश आदि सभी तत्वों को देवतुल्य तथा नदी, पर्वत, जलाशय, पशु–पक्षी, वृक्ष एवं पादपों को मनुष्यों के सगे–संबंधियों जैसा माना गया है। संपूर्ण ग्रंथ में प्रकृति एवं पर्यावरण जीवंत है तथा यह ग्रंथ मानव–मात्र को प्रकृति प्रेम एवं पर्यावरण संरक्षण की अत्यंत उपयोगी शिक्षा देने वाला है।

मुख्य बिन्दु

देवतुल्य, दुर्लभ, पर्यावरणीय चेतना, मानवीकरण, आलम्बन, संप्राप्य, चिरस्थायी, मंगलकामना, दुर्दुर, पर्यावरणीय उपयोगिता।

प्रस्तावना

पृथ्वी ही सौरमण्डल का एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ का पर्यावरण जीवन को संजोए हुए है। इसी पर्यावरण में समस्त सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। औद्योगीकरण तथा बढ़ती हुई उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण मनुष्य ने प्राकृतिक पर्यावरण के संसाधनों का अंधाधुन्ध दोहन किया है। इस पर्यावरणीय दोहन ने प्रकृति एवं उसके विभिन्न घटकों के मध्य संतुलन को बिगाड़कर गंभीर पर्यावरणीय समस्याऐं खड़ी कर दी हैं। पृथ्वी के अस्तित्व एवं उस पर जीवन को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए पर्यावरण संरक्षण परमाश्यक है।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को आदिकाल से ही बहुत महत्व दिया गया है। भारतीय ग्रंथों में जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश आदि सभी तत्वों को देवतुल्य तथा जीव–जन्तु, पक्षी और पेड़–पौधों को अपने सगे–संबंधियों जैसा माना गया है। बाल्मिकी रामायण में प्रकृति की सुंदरता का अनुपम चित्रण है। इस महान ग्रंथ में कहीं प्रकृति एवं पर्यावरण के आलम्बन रुप का चित्रण है तो कहीं उद्दीपन रूप का। अनेक स्थानों पर प्रकृति के विभिन्न घटकों का मानवीकरण करके उन्हें सजीव कर दिया गया है। रामायण में प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति जो अपार श्रद्धा एवं आदर का भाव प्रदर्षित किया गया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस ग्रंथ में प्रारंभ से अंत तक निरंतर प्रकृति किसी न किसी रूप में दृष्टिगोचर होती है तथा पर्यावरणीय चेतना के विविध रूप सहज संप्राप्य है।

इस ग्रंथ में संपूर्ण भारत वर्ष के न केवल सभी प्रमुख पर्वतों, नदियों, वनों, सरोवरों के महात्म्य पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है वरन् विभिन्न प्रकार के वृक्षों, पादपों, फल–फूलों एवं उनकी उपयोगिता के साथ–साथ अनेक पशुओं एवं पक्षियों के प्रति प्रेम व आदर का अनुपम चित्रण किया गया है। असंख्य श्लोकों में 'गंगा नदी' के महात्म्य का वर्णन है। विभिन्न श्लोकों में यज्ञों एवं हवन का उल्लेख है जिनका उद्देश्य पर्यावरणीय स्वच्छता है। बाल्मिकी रामायण में भारत में पायी जाने वाली भिन्न–भिन्न ऋतुओं एवं उनके पर्यावरणीय प्रभावों का सुंदर चित्रण है। हिमालय से लेकर, विंध्याचल, उदयांचल, मलय, कैलास, मेरु, चित्रकूट, सुदामा, इरावान, दुर्दुर आदि पर्वतों तथा नीलवन, चैत्ररथवन, भारूण्डवन, सालवन, दण्डकारण्यवन, पिप्पलीवन एवं पुष्कर, ब्रह्मावर्त सरोवर आदि एवं उनकी पर्यावरणीय उपयोगिता का विशद् वर्णन है। कामधेनु, गाय, बैल, हिरन, अश्व, हाथी, बाघ, चीता, सिंह, श्वान, मगर, ऊँट, गधा, रीछ, कपि, वानर, लंगूर आदि पशुओं के प्रति प्रेम का अनूठा चित्रण है। कोयल, मोर, हंस, सारस, शुक, चक्रवाक, पपीहा आदि पक्षियों की सुंदरता के वर्णन के साथ–साथ विभिन्न वृक्षों का सुंदर एवं सजीव मानवीकरण किया गया है। इस ग्रंथ में प्रकृति प्रेम एवं पर्यावरणीय चेतना से संबंधित सहस्रों श्लोक हैं किन्तु सबका विवरण देना संभव नहीं है। अतः प्रस्तुत शोध–पत्र में उनमें से कुछ श्लोकों (हिंदी अनुवाद) का विवरण प्रस्तुत है।

विश्वामित्र, गंगा एवं सरयू नदी के महात्म्य का वर्णन करते हुए श्रीराम एवं लक्ष्मण से कहते हैं ''गंगा नदी आकाश, पृथ्वी और पाताल तीनों पथों को पवित्र करती हुयी गमन करती है।[1] गंगा जी का जल सदैव स्नान के योग्य है। इसमें स्नान करके मनुष्य पवित्र होकर पुण्यफल प्राप्त करता है।[2] ब्रह्मसर से निकलने के कारण सरयू नदी बहुत पवित्र एवं विख्यात है।''[3] राम और लक्ष्मण दोनों भाईयों ने गंगा एवं सरयू दोनों नदियों को प्रणाम किया।[4] एक बार महर्षि विश्वामित्र घूमते हुए महर्षि वशिष्ठ के आश्रम पर पहुँचते हैं तो देखते हैं कि उनका आश्रम विभिन्न प्रकार के फूलों, लताओं और वृक्षों से शोभायमान था। नाना प्रकार के हिरन वहाँ सब तरफ विचरण कर रहे थे।[5] विश्वामित्र आश्रम में रहने वाले मनुष्यों के साथ–साथ वहाँ के लता–वृक्षों आदि का भी कुशलक्षेम रहते हैं।[6] जब राजा दशरथ रानी कैकेयी के भवन में जाते हैं तो उस भवन में तोते, मोर, क्रोन्च और हंस आदि पक्षी कलरव कर रहे थे।[7] चम्पा, अशोक और विभिन्न प्रकार नित्य फूलने–फलने वाले वृक्ष तथा बहुत–सी बावड़ियाँ उस भवन को सुशोभित कर रही थी।[8]

महर्षि वशिष्ठ श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी के संबंध में सुमन्त्र से कहते है– ''श्रीराम के राज्याभिषेक हेतु गंगाजल, समुद्रों से लाया हुआ जल, गूलर की लकड़ी की भद्रपीठ, सब प्रकार

के बीज, गंध, मधु, कुश, घी, दही, फूल, दूध, वृशभ, सिंह, अृव, अग्नि, गाय, पवित्र पशु–पक्षी आदि यहाँ उपस्थित हैं।''[9] इस प्रकार स्पष्ट है कि पेड़–पौधों, पशु–पक्षी आदि को मनुष्य के समान महत्व दिया गया है। इसके अलावा पवित्र जलाशयों, कूप, सरोवर, ब्रह्म सरोवर, दक्षिण की नदियों, गोदावरी, कावेरी के साथ–साथ गंडक, सोनभद्र आदि पवित्र नदियों का जल भी एकत्र किया गया था।[10] इन श्लोकों में जल तथा जल के समस्त स्रोतों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

बाल्मिकी रामायण में श्रीराम के भवन का इस प्रकार चित्रण है कि वह प्रकृति–प्रेम एवं पर्यावरणीय चेतना का सुंदर संदेश देता है– ''वह भवन कैलास पर्वत के समान, शरद ऋतु के बादलों की भांति श्वेत कांति वाला, मेरुपर्वत की कंदरा के समान शोभायमान, चंदन व अगर की सुगंध से युक्त, मलयाचल पर्वत एवं दुर्दुर चंदन गिरि की भांति सब ओर मनोहर सुगंध बिखेर रहा था तथा सारस और मयूर आदि पक्षियों का कलख उसकी शोभा बढ़ा रहा था।''[11] जब श्रीराम वनवास हेतु चलने की तैयारी कर रहे होते हैं तो उनकी माती कौशल्या उनकी मंगलकामना करती हुई कहती हैं– ''समिधा, कुशा, वेदियाँ, मंदिर, पर्वत, वृक्ष, क्षुप (छोटे वृक्ष), जलाशय, पक्षी, सर्प व सिंह वन में तुम्हारी रक्षा करें।[12] छहों ऋतुएँ, समुद्र, अंतरिक्ष, पृथ्वी, वायु, चराचर प्राणी सदा तुम्हारी रक्षा करें।''[13] सीता श्रीराम के साथ वन में जाने के लिए इस प्रकार प्रार्थना करती हैं– ''मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं आपके साथ वन में सर्वत्र घूमकर पर्वतों, छोटे–छोटे तालाबों और सरोवरों को देखूँ। मैं उन सुंदर सरोवरों की शोभा देखना चाहती हूँ जो श्रेष्ठ कमल पुष्पों से सुशोभित है तथा जिनमें हंस और कारण्डव आदि पक्षी भरे रहते हैं। जहाँ वन में सहस्रों हिरन, वानर और हाथी रहते हैं।''[14] जब श्रीराम वनवास हेतु जाने के लिए तैयार होते हैं तब वह कहते हैं– ''मृगों से भरे और भाँति–भाँति के पक्षियों के कलरवों से गूँजते हुए वन में हमलोग बड़े आनंद से रहेंगे।[15] मैं विचित्र वृक्षों से युक्त वन में प्रवेश करके फल–मूल का भोजन करता हुआ वहाँ के पर्वतों, नदियों और सरोवरों को देख–देख कर सुखी होऊँगा।''[16]

श्री राम को वनवास हेतु जाते देख अयोध्या की प्रजा कहती है– ''ये महान तेजस्वी श्रीराम संपूर्ण मनुष्यों के मूल हैं। जगत् के दूसरे प्राणी पत्ते, फूल, फल और शाखाएँ हैं।''[17] श्रीराम को वन में जाते देख महर्षि वशिष्ठ कैकेयी से कहते हैं– ''श्रीराम के साथ पशु, सर्प, मृग और पक्षी भी चले जा रहे हैं तथा वृक्ष भी उनके साथ जाने को उत्सुक हैं।''[18] अनेक ब्राह्मण श्रीराम को वन में जाने से रोकने की प्रार्थना करते हुए कहते हैं– ''ये वृक्ष भी तुमसे घर लौट चलने की प्रार्थना कर रहे हैं। वे पक्षी भी तुमसे लौट चलने की प्रार्थना कर रहे हैं। मार्ग में तमसा नदी भी रघुनाथ जी को रोकती हुई प्रतीत होती है।''[19] श्रीराम के वन में जाने के बाद अयोध्या की स्त्रियाँ कहती हैं– ''सुंदर वन, नदियाँ और पर्वत, मंजरियाँ और भ्रमरों से सुशोभित वृक्ष, फूल, फल, निर्मल जल वाले झरने सभी श्रीराम का स्वागत करेंगे।''[20]

जब श्रीराम, सीता व लक्ष्मण वन में भ्रमण करते हुए भारद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुँचते हैं तो देखते हैं कि आश्रम में चारों तरफ ऋषि–मुनि व पशु–पक्षी एक साथ बैठे हुए थे।[21] भारद्वाज ऋषि श्रीराम से चित्रकूट पर्वत की प्राकृतिक एवं पर्यावरणीय सुंदरता का वर्णन करते हुए कहते हैं– ''तुम चित्रकूट पर्वत पर जाकर निवास करो। उस पर बहुत से लंगूर, वानर और रीछ रहते हैं।[22] वह नाना

प्रकार के वृक्षों से हरा–भरा है। वह पर्वत परम पवित्र, असंख्य फल–मूलों से सम्पन्न है। वहाँ मोर, मृग, हाथी विचरते हैं। वहीं पर मंदाकिनी नदी, विभिन्न जलस्रोत, पर्वतशिखर, गुफाऐं व झरने हैं।[23] तत्पश्चात् भारद्वाज मुनि चित्रकूट पर्वत पर स्थित श्यामवट नामक बरगद तथा चीड़ और बेर के वृक्षों से युक्त नीलवन के महात्म्य का वर्णन करते हैं।''[24]

चित्रकूट में पहुँचने के बाद सीता वहाँ स्थित वटवृक्ष को प्रणाम करती हैं। एक–एक वृक्ष, झाड़ी, लता, पुष्पों, हंस व सारसों के कलनाद तथा यमुना नदी को देखकर अत्यंत प्रसन्न होती हैं।[25] चित्रकूट पर्वत की प्राकृतिक सुंदरता एवं पर्यावरणीय विविधता का वर्णन करते हुए श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण से कहते हैं– ''मीठी बोली बोलने वाले शुक–पिक आदि पक्षियों व कलरव सुनो। इस बसंत ऋतु में खिले हुए सुंदर पलाश–वृक्षों को देखो। हमारे जीवन–निर्वाह हेतु उपयोगी भिलावे और बेल के वृक्षों को देखो। मधु से भरे मधुमक्खियों के छत्तों को देखो। वन के इस भाग में फूलों की वर्षा–सी हो रही है। चातक पक्षी पी–पी कर रहा है। उधर वह मोर बोल रहा है तथा पपीहा मानो उसका उत्तर दे रहा है।[26]

जब भरत तथा शत्रुघ्न अपनी ननिहाल राजगृह से अयोध्या के लिए प्रस्थान करते हैं तो मार्ग में विभिन्न नदियाँ, पर्वत, वन आदि को पार करते हुए जाते हैं। जैसे– सुदामा नदी, सतलज नदी, शिला नदी, शिलावहा नदी, सरस्वती नदी, कुलिंगा नदी, कुटिकोष्टि नदी, उत्तानिका नदी, कुटिका नदी, कपीवती नदी, गोमती नदी आदि।[27]

जब भरत वशिष्ठ मुनि के साथ ऋषि भारद्वाज के आश्रम पहुँचते हैं तो वे वहाँ के ऋषि–मुनियों के साथ–साथ समस्त पशु–पक्षियों व पेड़–पौधों का भी कुशलक्षेम पूछते हैं।[28] ऋषि भारद्वाज के आश्रम में स्थान–स्थान पर बेल, कैथ, कटहल, आँवला, आम व बिजौरा के वृक्ष लगे थे तथा नीलम और वैदूर्य मणि के समान नाना प्रकार की घनी घास उगी थी।[29] भारद्वाज मुनि के तेज से बेल के वृक्ष मृदंग बजाते, बहेड़े के पेड़ ताल देते और पीपल के वृक्ष नृत्य करते थे। देवदार, ताल, तिलक, तमाल वृक्ष बौने बनकर तथा आमलकी, जामुन एवं मालती–मल्लिका आदि लताएँ नारी का रूप धारण करके भारद्वाज ऋषि के आश्रम में आ बसी।[30]

चित्रकूट प्रवास के दौरान श्रीराम सीता से चित्रकूट की प्राकृतिक शोभा एवं पर्यावरणीय उपयोगिता वर्णन करते है– ''यह पर्वत बहुसंख्यक पक्षियों, विभिन्न प्रकार के मृगों, व्याघ्रों, चीतों और रीछों से भरा है। सभी हिंसक पशु अपने हिंसक स्वभाव का त्याग करके पर्वत की शोभा बढ़ाते हैं। आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, तिन्दुक, बाँस, काश्मरी, नीम, वरण, महुआ, कदम्ब, बेत, इंद्र जौं, बीजक आदि वृक्षों से यह स्थान भरा है।[31] ऊँचे से गिरते झरने, प्रवाहित होते छोटे–छोटे स्रोत, जमीन के भीतर से निकलते सोते, गुफाओं से निकली पुष्पों की गंध वाली शुद्ध वायु से यह स्थान परिपूर्ण है। यदि तुम्हारे साथ मैं इस स्थान पर अनेक वर्षों तक रहूँ तो भी नगरत्याग का शोक मुझे कदापि पीड़ित नहीं करेगा।[32] श्रीराम अगस्त्य मुनि से आग्रह करते हैं कि वह उन्हें ऐसा कोई स्थान बताये जहाँ बहुत से वन हो ताकि वह वहाँ आश्रम बनाकर रह सके।[33]

बाल्मिकी रामायण में पंचवटी की प्राकर्षतिक सुंदरता एवं विविधता का अनुपम चित्रण है– ''वह विकसित वृक्षावलियों से घिरी रमणीय गोदावरी नदी है। पुष्पों, गुल्मों, लताओं से युक्त साल,

खजूर, पुंनाग, आम, अशोक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चंदन, पर्णास, लकुच, अश्वकर्ण, खैर, शमी, पलाश और पाटल आदि वृक्षों से घिरे पर्वत बड़े शोभायमान है।''[34] हेमंत ऋतु का वर्णन करते हुए श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं– ''जौं और गेहूँ के खेतों से युक्त ये वन सूर्योदय के समय शोभायमान लगते हैं। सुनहरे रंग के धान के खेत जो लटकी हुई बालों के कारण बहुत सुंदर लगते हैं। ओस की बूँदें पड़ने से घास भीगी है।[35] इस ऋतु में हिमालय पर्वत भी हिम के खजाने से भर जाता है।''[36]

बाल्मिकी रामायण में प्रकृति के सभी अवयवों यथा नदी, पर्वत, वृक्ष, पुष्प, पशु–पक्षी आदि का सजीव मानवीकरण किया गया है। जब रावण सीता का अपहरण कर लेता है तो श्रीराम व्याकुल होकर वन के विभिन्न वृक्षों, पशु–पक्षियों आदि से सीता का समाचार जानने का प्रयास करते हैं। वह कदम्ब, बेल, अर्जुन, ककुभ, तिलक, अशोक, ताल, जामुन आम, कदम्ब, शाल आदि विभिन्न वृक्षों, पुष्पों व लताओं से सीता के विषय में पूहते है। वह मृगों, हाथियों, बाघों आदि से भी सीता का पता पूछते हैं।[37]

जब सीता की ढूँढते हुए श्रीराम व लक्ष्मण पम्पा सरोवर पर पहुँचते हैं तो उस स्थान की प्राकृतिक सुंदरता एवं सम्पन्नता से अभिभूत होकर श्रीराम लक्ष्मण से कहते है– ''केवड़े, सिन्दुवार, वासन्ती पुष्पलताओं, कुंद–कुसुमों की झाड़ियों से शोभायमान, चिलबिल, मौलसिरी, नागकेसर, नील अशोक, अंकोल, कुरंट, सेमल, पारिभद्रक, पाटलि, मुचुकुन्द, अर्जुन, केतक, लसोड़ा, शिरीश, शीशम, धव, लाल कुरबक तथा नक्तमाल आदि वृक्षों से भरे हुए तथा हरी–हरी घासों से युक्त ऐसे रमणीय स्थान पर मुझे रहने का अवसर मिले तो मुझे न तो अयोध्या का राज्य न मिलने की भी कोई चिन्ता और न ही दूसरे दिव्य भोगों की अभिलाषा होगी।[38] जो लोग पद्म और कमलों की सुगंध लेकर बहने वाली शीतल, मंद एवं शोकनाशन पम्पा–वन की वायु का सेवन करते हैं, वे धन्य हैं।''[39]

बाल्मिकी रामायण में जैव विविधता एवं प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण मेरू पर्वत का वर्णन इस प्रकार है– ''उस पर्वत पर सभी ऋतुओं में फल देने वाले वृक्ष भ्रमरों से सेवित हैं तथा सभी मनोवांछित वस्तुओं को फल के रूप में प्रदान करते हैं। वहाँ पशु–पक्षी सुनहरे रंग के प्रतीत होते हैं तथा वहाँ बहुमूल्य मधु उपलब्ध होता है।''[40]

सुग्रीव के राज्याभिषेक के बाद माल्यवान् पर्वत पर रहते हुए श्रीराम वर्षा ऋतु का वर्णन लक्ष्मण से इस प्रकार करते हैं– ''आकाश में सब ओर बादल छाए हैं। केवड़े की सुगंध से भरी इस बरसाती वायु को मानो अंजलि में भरकर पीया जा सकता है। पहाड़ी नदियाँ वर्षा के नूतन जल को बड़े वेग से बहा रही हैं। जामुन के सरस फल आजकल लोग जी भरकर खाते हैं। आम के पके बहुरंगी फल पृथ्वी पर गिरते रहते हैं। छोटे–छोटे वीरबहूटी नामक कीड़ो से बीच–बीच में चित्रित हुई नूतन घास से आच्छादित भूमि शोभायमान हो रही है।''[41]

बाल्मिकी रामायण में मनुष्य, पशु, पक्षी, सरीसृप, वृक्ष एवं पादप सभी को एक समान माना गया है। न केवल मनुष्य वरन् पशु–पक्षी, वृक्ष व पादपों की उत्पत्ति भी देवी–देवताओं से मानी गयी है। अरण्यकांड के चौदहवें सर्ग में जटायु श्रीराम को बताते हैं– ''देवी क्रोन्ची, भासी, श्येनी तथा धृतराष्ट्री ने क्रमषः उल्लूओं, भास, बाजों, गिद्धों एवं सभी प्रकार के हंसों को जन्म दिया। भामिनि ने चक्रवाक पक्षी को जन्म दिया। इसी प्रकार मृगी, भद्रमदा, हरी, शार्दूली, मातंगी, रोहिणी आदि देवियों ने क्रमषः सभी

प्रकार के मृगों, ऐरावत, सिंह, वानर, लंगूर, व्याघ्र, हाथी एवं गायों को जन्म दिया। विनता ने गरुड़ और अरुण कद्रू ने सभी प्रकार के नागों, अनला ने फलदार वृक्षों को उत्पन्न किया था।''[42]

इस महान् ग्रंथ में जल संरक्षण, जल की शुद्धता, पवित्रता तथा जल के महत्व पर बहुत बल दिया गया है। इस ग्रंथ में पानी को गन्दा करने को दूसरों को जहर देने के समान पापकर्म माना गया है।[43] रामायण में अनेक स्थानों पर यज्ञों एवं हवनों का वर्णन है जिनका प्रत्यक्ष संबंध पर्यावरणीय शुद्धता से है। एक बार जब श्रीराम अपनी माता कौशल्या के भवन में जाते हैं तो वह हवन करा रही होती हैं तथा वहाँ पर हवन हेतु दही, अक्षत, घी, मोदक, धान का लावा, खीर, खिचड़ी, समिधा आदि रखे होते हैं।[44] रामायण में उल्लिखित यज्ञ सात्विक प्रकार के हैं तथा यज्ञों को बहुत महत्व दिया गया है। जब विश्वामित्र अयोध्या आते हैं तो यज्ञों के विषय में पूछते हैं।[45] रामायण में उल्लेख है कि हविष्य, घी, पुरोडाश, दही, कुश और खैर आदि यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली सामग्री है।[46]

निष्कर्ष

वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण मानव–मात्र की चिंता का विषय है। इस संकट के समय हमें अपने प्राचीन ग्रंथों का स्मरण होता है जिनमें शुद्ध पर्यावरण का प्रमुख स्थान था। बाल्मिकी रामायण में प्रकृति एवं पर्यावरण जीवंत है तथा प्रकृति का हास–विलास अद्भुत है। इस ग्रंथ में न केवल प्रकृति एवं पर्यावरण को अनेक आयामों से शब्दबद्ध किया गया है वरन् विभिन्न जीव–जंतुओं व वनस्पतियों को उनकी पर्यावरणीय उपयोगिता के अनुसार अत्यधिक महत्व दिया गया है। हर समय हम प्रकृति एवं पर्यावरण को अपने निकट महसूस करते हैं। इस ग्रंथ में ईश्वर, प्रकृति एवं समस्त जीवधारियों में अद्भुत संबंध स्थापित किया गया है। रामायण मानव–मात्र को प्रकृति प्रेम एवं पर्यावरणीय चेतना की शिक्षा देने वाला अत्यंत उपयोगी ग्रंथ है।

संदर्भ

1. बालकाण्ड. 1.46.6.
2. वही. 1.46.14.
3. वही. 1.24.
4. वही. 1.24.
5. वही. 1.51.22.23.
6. वही. 1.52.5.
7. अयोध्याकाण्ड. 2.10.12.
8. वही. 2.10.14.
9. वही. 2.14.34.41.
10. वही. 2.15.6.
11. वही. 2.15.30.34.
12. वही. 2.25.7.10.
13. वही. 2.25.13.14.
14. वही. 2.27.17, 18, 22.

15. वही. 2.34.51.
16. वही. 2.34.59.
17. वही. 2.33.15.
18. वही. 2.37.33.
19. वही. 2.45.30.32.
20. वही. 2.48.10.15.
21. वही. 2.54.19.
22. वही. 2.54.29.
23. वही. 2.54.39.42.
24. वही. 2.55.6.8.
25. वही. 2.55.24.31.
26. अयोध्याकाण्ड. 2.56.1.9.
27. वही. 71वां सर्ग.
28. वही. 2.90.8.
29. वही. 2.91.29.30.
30. वही. 2.91.49.51.
31. वही. 2.94.7.10.
32. वही. 2.94.13.15.
33. अरण्यकाण्ड. 3.13.11.
34. वही. 3.15.16.18.
35. वही. 3.16.16.20.
36. वही. 3.16.9.
37. वही. 3.60.11.25.
38. किश्किन्धाकाण्ड. 4.1.77.82, 96.
39. वही. 4.1.104.
40. युद्धकाण्ड. 6.27.34.37.
41. किश्किन्धाकाण्ड. 4.28.8, 17.24.
42. अरण्यकाण्ड. 3.14.18.32.
43. अयोध्याकाण्ड. 2.75.56.
44. वही. 2.20.16.18.
45. वही. 2.18.
46. वही. 2.61.17.